''मैंने प्रभु को देखा!''

(20:1-31)

कॉलेज के दिनों में एक बार मैं किसी दूसरे राज्य की एक युवक सभा (यूथ मीटिंग) में काम करने के लिए छात्रों के एक दल के साथ गया। अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए गाड़ी में बैठे हुए हमें अपने-अपने विश्वास के सफ़र के बारे में बताते हुए कई घण्टे बीत गए। कार में बैठे छात्रों में से कई मसीही परिवार में ही पले-बढ़े थे, और कई अपने घर में अकेले ही मसीही थे। किसी को तो संदेह से उबरने के लिए संघर्ष करना पड़ा था और किसी को बिल्कुल भी नहीं। किसी ने हाल ही में अपना जीवन यीशु को देने का निर्णय लिया था, और कोई पिछले दस वर्षों से मसीही था।

अपनी-अपनी कहानी बताते हुए, जिस बात ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया वह एक लड़की की कहानी थी जिसने हाई स्कूल में जीव विज्ञान की कक्षा में विश्वास खो दिया था। एक शिक्षक की बात मानकर, जो परमेश्वर में उसके विश्वास का मज़ाक उड़ाता था, उसने विश्वास को एक और अवसर देने के लिए सुसमाचार की पुस्तकें फिर से पढ़ने का निर्णय लिया था। वह हैरान थी, ''क्या यह वास्तविकता है या यह कल्पित मनोहर कहानी? क्या यीशु नाम का कोई आदमी पृथ्वी पर रहता भी था? यदि वह रहता था तो क्या वह सचमुच परमेश्वर का पुत्र था?'' कई महीनों तक वह इन प्रश्नों का उत्तर ढूंढ़ती रही। अन्ततः वह एक स्पष्ट परन्तु गंभीर निर्णय पर पहुंचा। उसे समझ आ गया कि सुसमाचार के संदेश के सत्य होने का आधार पुनरुत्थान ही है। यदि यीशु मुर्दों में से जी उठा था, तो यह सब सत्य होगा कि उसने आश्चर्यकर्म किए थे, और वह परमेश्वर का पुत्र है। यदि वह मुर्दों में से नहीं जी उठा, तो फिर वह केवल एक कल्पना या एक भयानक धोखा है।

मेरी वह मित्र सही थी। सुसमाचार की पुस्तकों (यहां यूहन्ना रचित सुसमाचार) के दावे यीशु के पुनरुत्थान की सच्चाई पर ही टिकते या सिद्ध होते हैं। पौलुस ने इसे इस प्रकार कहा:

> ... [परमेश्वर ने] अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की थी जो शरीर के भाव से तो दाऊद के वंश से उत्पन्न हुआ। और पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है (रोमियों 1:2-4)।

अब, जब हम यूहन्ना की पुस्तक अर्थात विश्वास के सुसमाचार के चरम तक आते हैं, तो

हमें यीशु के पुनरुत्थान की कहानी मिलती है। यह कोई छोटी बात नहीं है, क्योंकि सब कुछ उसी पर निर्भर है!

यूहन्ना की पुस्तक में पुनरुत्थान की प्रस्तुति स्पष्ट है और जी उठे प्रभु के चार अलग-अलग दर्शनों के इर्द-गिर्द है। हर दर्शन हर बार कुछ नया प्रस्तुत करता है। अध्याय 20 के आरम्भ में हम दूसरों को पुनरुत्थान से जुड़े प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ते हुए और अपने आपको दर्शकों के रूप में मान सकते हैं। पर अध्याय के अंत में हम देखते हैं कि तस्वीर के मुख्य आकर्षण हम स्वयं ही हैं, क्योंकि हमें निर्णय लेने के लिए कहा जाता है कि हम यीशु का क्या करें!

पुनरुत्थान और मरियम मगदलीनी (20:1-18)

यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद वाले रविवार की सुबह, जब अभी अंधेरा ही था तो मरियम मगदलीनी भी कब्र पर आई। यह देखकर कि वह पत्थर जो कब्र पर रखा गया था वहां से गायब था, उसने भागकर पतरस और यूहन्ना (''दूसरा चेला जिससे यीशु प्रेम रखता था'') के पास गई और उन्हें बताया कि ''वे प्रभु को कब्र में से निकाल ले गए हैं; और हम नहीं जानते, कि उसे कहां रख दिया है'' (यूहन्ना 20:2)। लगता है कि उस सुबह मरियम के मन में पुनरुत्थान का विचार नहीं आया होगा, बेशक वह यीशु की समर्पित शिष्या थी और उसके उपदेशों को बड़ी उत्सुकता से सुनती थी। उसके ख्याल से, खाली कब्र का कारण केवल यही हो सकता था कि कोई उसकी देह को चुरा ले गया था।

मरियम की बात सुनकर, पतरस और यूहन्ना कब्र की ओर दौड़ गए। यूहन्ना, आगे निकलकर पहले ही पहुंच गया और कब्र के पास जाकर रुक गया। उसे कब्र के बाहर खड़ा छोड़कर, पतरस अंदर चला गया। (भला पतरस की यह आदत नहीं थी?) दोनों ने मलमल के कफ़न को वहां पड़े और मुंह पर बांधने वाले कपड़े को एक तरफ लपेटकर रखे हुए देखा। अब यूहन्ना भी कब्र के अन्दर आ गया था और उसने विश्वास किया। पर इन चेलों को अभी भी यह समझ नहीं आई थी कि पवित्र शास्त्र में यह कैसे बताया गया था कि मसीह मुर्दों में से जी उठेगा। पतरस और यूहन्ना के लिए इस बात को समझना बहुत कठिन था।

इन दोनों चेलों के अपने घरों को लौटने के बाद, मरियम कब्र के पास खड़ी होकर रोती रही। वह यीशु से बहुत प्रेम करती थी, और उसे लगा कि कब्रों के लुटेरों ने उसके घाव पर नमक छिड़क दिया है। वह अपने जीवन में इससे भयंकर स्थिति की कल्पना नहीं कर सकती थी। उसने रोते हुए, झुककर कब्र में झांका। वहां उसे दो स्वर्गदूत मिले जो अंगरक्षकों की तरह वहां बैठे थे जहां यीशु का सिर और पांव रखे गए थे। जब उन्होंने उससे पूछा कि वह क्यों रो रही है, तो उसने कहा, ''वे मेरे प्रभु को उठा ले गए और मैं नहीं जानती कि उसे कहां रखा है'' (20:13)।

ध्यान दें कि यहां कहानी में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि यीशु की देह वहां नहीं थी। यह कोई छोटा विवरण नहीं है! यह भावी पीढ़ियों के विश्वास के लिए एक प्रमाण है। यूहन्ना अध्याय 20 को प्रेरितों के काम के पहले अध्यायों के साथ पढ़ने पर, हमें पता चलता

है कि प्रारम्भिक कलीसिया के विरोधी किस तरह मसीहियत के फैलाव को आसानी से रोक सकते थे अर्थात केवल यीशु की मृत देह को पेश करके ही वे मसीहियत को बढ़ने से रोक सकते थे। उस से मसीहियत का फैलाव एकदम रुक जाता। स्पष्टत:, यीशु की लाश नहीं मिली, वरना वे इसे लोगों को दिखाकर मसीहियत को बढ़ने से रोक सकते थे। यीशु की लाश का न मिलना उसके पुनरुत्थान का सबसे बड़ा प्रमाण है!

फिर मरियम ने मुड़कर देखा कि यीशु वहां खड़ा है। किसी कारण, शायद भोर के अंधेरे के कारण, यीशु के कपड़ों या आंखों में आंसुओं के कारण उसे स्पष्ट न देख पाने पर मरियम पहचान न पाई कि सामने खड़ा व्यक्ति यीशु ही है। उसने उसे कब्र के आस-पास की भूमि की रक्षा करने वाला माली समझकर, उससे बिनती की, ''हे महाराज, यदि तू ने उसे उठा लिया है तो मुझ से कह कि उसे कहां रखा है और मैं उसे ले जाऊंगी'' (20:15)। तब यीशु ने उसे नाम लेकर बुलाया: ''मरियम!'' उसी क्षण, उसे पहली बार पता चला कि वह जी उठे प्रभु से बात कर रही है।

यीशु के मुख से अपना नाम सुनकर, मरियम ने जवाब में उसे ''रब्बोनी'' कहा, जो कि गुरु के लिए एक इब्रानी शब्द है। यीशु ने उसे अपने आपको छूने से मना किया (सम्भवत: भौतिक से अधिक यह एक भावनात्मक मुद्दा था) क्योंकि वह अभी पिता के पास ऊपर नहीं गया था (20:17)। बाग से निकलकर, वह तुरन्त चेलों के पास गई और उन्हें बताया, ''मैं ने प्रभु को देखा'' (20:18)। महान गुरु से मिलकर मरियम को जी उठे प्रभु में विश्वास हो गया था!

पुनरुत्थान और ऊपरी कमरे में चेले (20:19-24)

पुनरुत्थान वाला रविवार चेलों के लिए लम्बा और उलझाने वाला था। उस शाम वे यहूदी अगुओं के भय से जिन्होंने यीशु को मार दिया था, बन्द दरवाजों के पीछे छिपे हुए थे। मरियम मगदलीनी की बात अभी भी किसी भावुक और निराश व्यक्ति का सनकी दावा लगता था। उन्हें यह तो पता नहीं था कि उसकी लाश कहां रखी गई थी, पर उनके मनों में यीशु मर चुका था। यहां पर हमें यह ध्यान देना चाहिए कि उन चेलों के मनों में डर आना स्वाभाविक ही था जिनका स्वामी मर गया हो। आज भी, जब मसीही लोग डरकर रहते हैं, तो उनका जीवन ऐसा होता जैसे उनका प्रभु अभी भी कब्र में ही हो।

चेले जब बंद कमरे में इकट्ठे हुए, तो अचानक यीशु कमरे में प्रकट हो गया। उसने उनका इन शब्दों से अभिवादन किया ''तुम्हें शान्ति मिले'' (20:19)। और उन्हें अपने हाथों और पावों में पड़े कीलों के निशान दिखाए। आश्चर्यचकित चेले ''प्रभु को देखकर आनन्दित हुए'' (20:20)। विश्वास के संदर्भ में ''शांति,'' ''आनन्दित,'' और ''डर'' शब्द यूहन्ना रचित सुसमाचार की पहली आयतों का स्मरण दिलाते हैं, जहां यीशु ने अपनी मृत्यु तथा पुनरुत्थान की भविष्यवाणी की थी:

> मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें

नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे। तुमने सुना, कि मैं ने तुम से कहा, कि मैं जाता हूं, और तुम्हारे पास फिर आया हूं: यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते, कि मैं पिता के पास जाता हूं क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है। और मैं ने अब इस के होने से पहिले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम प्रतीति करो (14:27-29)।

अन्त में, पुनरुत्थान की शाम जब यीशु बंद कमरे में चेलों के सामने प्रकट हुआ, तो उन्हें अहसास होने लगा कि वह एक अद्‌भुत गुरु या बड़े नबी से कहीं बढ़कर था अर्थात वह जी उठा मसीह और परमेश्वर का पुत्र था! उनका डर खत्म होने लगा, उनका आनन्द लौट आया और वे परमेश्वर की अद्‌भुत शांति का अनुभव करने लगे।

पुनरुत्थान और थोमा (20:24-29)

बाकी दस चेलों के सामने यीशु के प्रकट होने के समय थोमा वहां नहीं था। उसके लौटने पर उन्होंने उसे मरियम की कही बात कही: ''हम ने प्रभु को देखा है'' (20:25)। बेशक थोमा किसी समय यीशु पर बहुत विश्वास रखता था,[1] परन्तु यहां कहानी में उसका मन बहुत ही कठोर और संशयवादी हो गया। एक समय ऐसा था जब वह यीशु के साथ वास्तविकता का स्वर्गीय दृश्य देख सकता था, पर निराशा और सदमे ने उसे संसार की तरह सोचने पर मजबूर कर दिया था। थोमा ने ज़ोर देकर कहा, ''जब तक मैं उस के हाथों में कीलों के छेद न देख लूं, और कीलों के छेदों में अपनी उंगली न डाल लूं और उसके पंजर में अपना हाथ न डाल लूं, तब तक मैं प्रतीति नहीं करूंगा'' (20:25)।

थोमा के संदेह के लिए उसकी आलोचना करना आसान है। परन्तु सच्चाई यह है कि हम सब उसकी तरह ही हैं। उस निर्णय को हल्के से लेना बहुत हद तक हमारे विश्वास पर निर्भर करता है। हम यीशु को अपनी आंखों से और छूकर देखना चाहते हैं कि वह जी उठा है या नहीं। थोमा अपने संदेहों का सामना करके उनमें से निकलने में हमारी सहायता करता है।

आठ दिनों तक थोमा द्वारा अपने संदेह को बार-बार व्यक्त करने के बाद, चेले फिर से बंद दरवाजों के पीछे इकट्ठे हुए। इस बार यीशु के पहले की तरह ही फिर प्रकट होने के समय थोमा उनके साथ था। थोमा का संदेह दूर करने के लिए यीशु ने उसे अपने हाथ देखने, अपने घावों को छूने और अपनी पसली में हाथ डालने के लिए कहा। तो थोमा पुकार उठा, ''हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर'' (20:28)। यूहन्ना रचित सुसमाचार में प्रभु के रूप में यीशु का यह सबसे बड़ा एकमात्र अंगीकार है और यह अंगीकार किसी समय बड़ी निराशा में डूबे संदेह करने वाले, कठोर मन का था।

थोमा के अंगीकार के बाद, यीशु ने उसे एक बात कही जो आज हमारी स्थिति को बताती है। उसने थोमा से कहा, ''तू ने तो मुझे देखकर विश्वास किया है, धन्य वे हैं जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया'' (20:29)। हम सब वही प्रमाण चाहते हैं जो थोमा को मिला

था, पर आज यह सम्भव नहीं है, क्योंकि यीशु पिता के साथ रहने के लिए स्वर्ग में चला गया है। हमारे लिए, विश्वास का आधार कोई बात दिखाना होना चाहिए। जो काम थोमा और अन्य प्रेरितों के लिए कीलों के चिह्न ने किया, वही काम आज हमारे लिए यूहन्ना रचित सुसमाचार करता है अर्थात यह हमें जी उठे प्रभु से मिलने का मार्ग दिखाता है। बेशक हमने उसे प्रत्यक्ष नहीं देखा, पर उसकी गवाहियों, उसके दावों, उसकी शिक्षाओं और परमेश्वर के लिखित वचन की सामर्थ के द्वारा हम उससे मुलाकात करते हैं।

पुनरुत्थान और हम (20:30, 31)

20:30, 31 में, हम सम्पूर्ण यूहन्ना रचित सुसमाचार के उद्देश्य वाक्य पर आते हैं:

> यीशु ने और भी बहुत से चिह्न चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।

उसने स्पष्ट कहा कि यीशु ने अपने चेलों की उपस्थिति में बहुत से और भी ''चिह्न'' दिखाए, पर वे सात चिह्न[2] जो सुसमाचार की इस पुस्तक में ''लिखे गए'' हैं, आने वाली पीढ़ियों में विश्वास उत्पन्न करने के उद्देश्य से ही शामिल किए गए हैं। सुसमाचार की इस पुस्तक के द्वारा यीशु की कहानी को जानने वाले लोग यह विश्वास कर सकते हैं कि यीशु ही मसीह अर्थात परमेश्वर का पुत्र है और विश्वास करके उसके नाम से हम जीवन पा सकते हैं। यूहन्ना रचित सुसमाचार महत्वपूर्ण उद्देश्य वाली एक व्यावहारिक पुस्तक है।

सुसमाचार की चारों किताबों में पुनरुत्थान के वृत्तांतों में कहीं भी यह सुझाव नहीं दिया गया कि किसी ने वास्तव में यीशु को कब्र से बाहर आते देखा। बहुत से लोगों ने उसे मरते देखा और बहुतों ने उसे जी उठने के बाद देखा, पर किसी ने भी उसे कब्र से निकलते नहीं देखा। प्रारम्भिक चेलों की तरह ही हमें भी अपने ही निष्कर्ष निकालने के लिए छोड़ दिया जाता है। कॉलेज की उस मित्र की तरह जिसने मुझसे कहा था, ''हर बात पुनरुत्थान पर आधारित है। यदि यह सत्य है, तो सब सत्य है। यदि यह झूठ है तो कोई लाभ नहीं है।''

सारांश

विद्वान लम्बे समय से यह चर्चा करते रहे हैं कि यूहन्ना ने सुसमाचार की अपनी पुस्तक उन लोगों में विश्वास उत्पन्न करने के लिए, जो पहले बिल्कुल विश्वास नहीं करते थे या कमज़ोर विश्वास वालों का विश्वास मज़बूत बनाने के लिए लिखी। क्या ''कि तुम विश्वास करो'' का अर्थ ''कि तुम विश्वास करने *लगो*'' या ''कि तुम विश्वास *करते रहो*'' है? यूहन्ना रचित सुसमाचार में या का सबसे अच्छा उत्तर ''दोनों'' है। निश्चय ही यूहन्ना ने उन लोगों में विश्वास उत्पन्न करने के लिए लिखा जो पहले बिल्कुल भी विश्वास नहीं करते थे। इसके अलावा सुसमाचार की इस पुस्तक में मसीही समाज में अधिकतर थके हुए, संघर्षरत,

कमज़ोर या डरपोक विश्वास की समस्याओं को सम्बोधित किया गया है।

मेरे विचार से यूहन्ना को चार साल की लड़की सकीया की कहानी अच्छी लगी होगी जिसने अपने माता-पिता को अपने नवजात भाई के साथ अकेले छोड़ने के लिए कहा। पहले तो उसके माता-पिता ऐसा करने से हिचकिचाते रहे, पर जब उन्होंने देखा कि वह अपने भाई के प्रति इतनी कोमल और दयालु है तो वे मान गए। दरवाजे में एक छोटी सी दरार में से उत्सुकतापूर्वक उन्होंने सकीया को झूले के ऊपर चलते और प्रेम से यह कहते हुए देखा, ''मुन्ना, मुझे बता कि परमेश्वर को कैसा लगता है। मैं भूल गई हूं।''

यह पाठ पढ़ने वाले कुछ लोगों के लिए, विश्वास केवल एक शुरुआत ही है। साथ ही यह बढ़ रहा विश्वास डराने वाला और रोमांचकारी हो सकता है, दूसरों के लिए विश्वास अधिकतर भूतकाल की बात है, अर्थात ऐसी बात जो किसी समय जीवित थी पर अब मर चुकी है। *यूहन्ना रचित सुसमाचार ''भूलना आरम्भ करने वालों के साथ-साथ उन लोगों के लिए भी है जो विश्वास को जानते भी नहीं थे।''*

यीशु के पुनरुत्थान के विषय में आपका निर्णय क्या है? क्या आप विश्वास करते हैं? क्या आप विश्वास करेंगे? क्या आप अपने विश्वास का नवीनीकरण करेंगे? *सब कुछ* इसी फैसले पर निर्भर करता है!

पाद टिप्पणियां

[1]यूहन्ना 11:16 यीशु के प्रति थोमा के पहले समर्पण का एक अच्छा उदाहरण है। [2]यूहन्ना रचित सुसमाचार के सात चिह्न पानी का मय बनाना (अध्याय 2); रोमी अधिकारी के पुत्र को चंगा करना (अध्याय 4); बैतसदा के कुंड पर लंगड़े आदमी को चंगा करना (अध्याय 5); पांच हज़ार लोगों को भोजन खिलाना (अध्याय 6); पानी पर चलना (अध्याय 6); जन्म के अंधे को चंगा करना (अध्याय 9) और लाज़र को मुर्दों में से जिलाना (अध्याय 11) हैं। शायद यूहन्ना रचित सुसमाचार को ''सात चिह्नों और बड़े चिह्न (पुनरुत्थान)'' का सुसमाचार कहना अधिक उचित होगा।